Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

भूमण्डलीकृत समाज और संस्कृति

Dr. Geeta Shahay*

Department of Hindi, Gaya College, Gaya

सार – *'भूमंडलीकरण' बहुप्रचलित शब्द है। इसे वैश्विक बाजार भी कहते है जहाँ एक देश दूसरे देश पर निर्भर हो जाता है। वैश्विक बाजार में केवल वस्तुओं और पूँजी का ही संचरण नहीं होता, अपितु लोगों का भी संचरण होता है। वैश्विक बाजार में उदारीकरण और निजीकरण भी सम्मिलित हैं। 'उदारीकरण' में औद्योगिक और सेवा क्षेत्र की विभिन्न गतिविधियों से संबंधित नियमों में ढ़ील होती है। विदेशी कंपनियों को घरेलू क्षेत्र में व्यापारिक और उत्पादन इकाइयाँ लगाने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। 'निजीकरण' के माध्यम से निजी क्षेत्र की कम्पनियों को उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन की अनुमति प्रदान की जाती है, जिनकी उन्हे पूर्व में अनुमति नहीं थी।*

----------X----------

भूमंडलीकरण का प्रभाव विश्व में सर्वत्र है। विश्व के एक भाग के लोग अन्य भाग के लोगों के साथ अंतक्रिया कर रहे हैं। "भूमंडलीकरण मनुष्य की एक गहरी, पुरातन आकांक्षा को पूरा करती है।"[1] भूमंडलीकरण की अवधारणा समूची दुनिया को अपने में समाहित करती है। इसकी चालक शक्तियों का मूल स्त्रोत पश्चिमी सभ्यता के रथ के साथ जुड़ा है। इसके एक ओर सार्वभौमिकता है तो दूसरी ओर समांगता। विकास के राजपथ ये दोनों एक साथ भागते हैं।

भूमंडलीकरण प्रत्येक देश को भिन्न-भिन्न पद्धतियों से प्रभावित किया है। इसका प्रभाव विकसित देशों पर विकासशील देशों से अलग किस्म का होता है। विकसीत देशों में भूमण्डलीकरण से नौकरियाँ कम हुई हैं, क्योंकि कई कम्पनियाँ उत्पादन खर्च को कम करने के लिए उत्पादन इकाइयों को विकासशील देशों में ले जा रही है। विकासशील देशों में भूमण्डलीकरण खाद्यानों एवं अन्य कई निर्मित वस्तुओं के उत्पादकों को प्रभावित करता है। "भूमंडलीकरण ने अपना वैश्विक बाजार बनाने के लिए विकासशील देशों को दूसरे देशों से निश्चित मात्रा में कुछ वस्तुएँ खरीदना अनिवार्य कर दिया है। इन उत्पादों का भरपूर प्रचार किया जा रहा है। इनकी गुणवत्ता को बढ़ा-बढ़ाकर टी.वी. के स्क्रीन पर विज्ञापित कर नए ग्राहक ढूँढे जा रहें है।"[2]

समाज और संस्कृति की खोज भूमंडलीकरण के संदर्भ में दो दृष्टियों से आवश्यक है। "स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश में एक सांस्कृतिक अराजकता व्याप्त हो गई है। स्वदेश और स्वदेशी की भावनाएँ, अशक्त होती जा रही है। हम बेझिझक पश्चिम का अनुकरण कर अपनी अस्मिता खोते जा रहे है।"[3] यह प्रवृत्ति एक छोटे पर प्रभावशाली, तबके तक सीमित है, पर उसका फैलाव हो रहा है। यदि इसे हमने बिना बाधा बढ़ने दिया तो हमें परम्पराओं की सम्भव उर्जा से वंचित होना पड़ेगा और हमारी स्थिति बहुत कुछ त्रिशंकु जैसी हो जायेगी। दूसरा कारण और भी महत्वपूर्ण है। संस्कृति आज की दुनिया में एक राजनीतिक अस्त्र के रूप में उभर रही है, निजी स्वार्थ, जिसका उपयोग खुलकर अपने उद्देश्यों के लिए कर रहे है।

भूमंडलीकरण जो कि समानता और आपसी सदाचार पर आधारित वास्तविक अंतर्राष्ट्रीयवाद के बिल्कुल विपरीत हैं। धीरे-धीरे सदियों से पुरूष और स्त्रियों द्वारा अर्जित सांस्कृतिक ज्ञान के अद्वितीय भण्डार के साथ-साथ स्थानीय सांस्कृतिक परंपरा, रीति-रिवाज पहचानों को भी मिटाया जा रहा है। संस्कृतियों एवं भाषाओं के लिए यह खतरा जैविक यथार्थ की दृष्टि से आनुवांशिक वैविध्य की संभावित क्षति की अपेक्षा कम खतरनाक नही है। "भूमंडलीकरण देश की सरकारों को संसाधनों का निजीकरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है।"[4] इससे लाभ कमाने की दृष्टि से संसाधनों का शोषण होता है और पैसा कुछ लोगों के हाथों में इकट्ठा हो जाता है। भूमण्डलीकरण सभी प्रकार की व्यापारिक गतिविधियों को नियमित एवं नियंत्रित करने की शक्ति सरकार के स्थान पर अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को देता है। ये परोक्ष रूप से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से ही संचालित होते हैं।

"भूमंडलीकरण ने 'प्रतिभापलायन' को भी बढ़ावा दिया है।"[5] प्रतिभा सम्पन्न लोग मल्टीनेशनल कम्पनियों की ओर भाग रहे है जिसका असर हमारी भारतीय संस्कृति पर प्रत्यक्ष रूप से

www.ignited.in

हो रहा है। पहले जहाँ भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार प्रणाली आती थी वह शनै-शनै विखण्ड़ीत हो रही है। संयुक्त परिवार प्रणाली की जगह आज एकल परिवार प्रणाली ने ले ली है। हमारी खान-पान की आदते, त्यौहार समारोह भी बदल गए है। जन्मदिन, महिला दिवस, फास्टफूड रेस्तरांओं की बढ़ती संख्या और कई अंतर्राष्ट्रीय त्यौहार भूमण्डलीकरण के प्रतीक हैं। भूमंडलीकरण का प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे पहनावे में देखा जा सकता है। समुदायों के अपने संस्कार परंपराए और मूल्य भी परिवर्तित हो रहे है। मल्टीनेशनल कम्पनियों के कारण स्थानीय बाजार को कड़ी स्पर्धा का सामना करना पड रहा है। भारत प्रारंभ में 'सोने की चिड़िया' कहलाता था। इसी आकर्षण ने विश्व बाजार का रूख भारत की ओर मोड़ दिया है।

वर्तमान परिदृश्य में भूण्डलीकरण के विस्तार से सांस्कृतिक बोध के नाम पर धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन पद्धतियों में बड़ी तीव्रता से परिवर्तन हुआ है। "आठवें दशक के उत्तरार्द्ध से सम्पूर्ण विश्व में भूमण्डलीय संस्कृति के अस्तित्व में आने से एक नए प्रकार की स्वतंत्रता, समानता एवं जनतंत्रात्मक व्यवस्था ने जन्म लिया।"[6]

"भूमण्डलीय संस्कृति में विचार सूचना मूल्य और आधुनिक रूचियों का प्रवाह निरन्तर जारी है।"[7] आज सूचना एवं संचार क्राति ने संपूर्ण विश्व को एक ग्लोबल विलेज में तब्दील कर दिया है।

निष्कर्षतः भूमण्डलीकरण ने हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को आद्योपान्त प्रभावित किया है। अब हम अपनी मर्जी से कपड़े नहीं पहनते, बल्कि वैश्विक बाजार अपने विज्ञापनों में हमसे जो पहनने को कहता है, उन्हीं को हम पहनते हैं। हमारे खाने-पीने और रहने पर भी इसी बाजारी संस्कृति का प्रभाव है। यही बाजार हमारे लिए टूथपेस्ट का निर्धारण करता है तथा यही हमारे लिए दर्द निवारक दवाइयाँ बताता है। इस विश्व बाजार ने हमें अपने उत्पादों पर अत्यधिक निर्भर बना दिया है। जिससे एक अन्धी उपभोक्तावादी संस्कृति दिनों दिन बढ़ रही है, लगता है उत्पाद हमारे लिए नहीं, हम उत्पादों के लिए हैं। साथ ही इसने हमारी समाज की संस्कृति को विखण्डीत कर उपभोक्तावादी संस्कृति को विकसित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. भाषा, साहित्य और समाज का अन्तर संबंध: डॉ. अरूण वर्मा, पृ. 115
2. भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ: संचार माध्यम और हिन्दी का संदर्भ, ऋषभ देव शर्मा (आलेख)
3. भाषा, साहित्य और समाज का अन्तरसंबंध: डॉ. अरूण वर्मा, पृ. 145
4. भाषा, साहित्य और समाज का अन्तरसंबंध: डॉ. अरूण वर्मा, पृ. 134
5. भाषा कौशल एवं संचार माध्यम: डॉ. मधु जैन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृ. 38/39
6. भाषा कौशल एवं संचार माध्यम: डॉ. मधु जैन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृ. 33

Corresponding Author

Dr. Geeta Shahay*

Department of Hindi, Gaya College, Gaya

www.ignited.in